Tender Heart High School, Sec-33-B, CHD.

कक्षा- चौथी शिक्षिकाएँ - सुमन शर्मा, रोमा रानी
विषय- हिंदी साहित्य (पाठ-13 'चतुर चित्रकार') -2

पुस्तक- नवतरंग -4

प्यारे बच्चो, सुप्रभात!

आज हम कक्षा-चौथी की हिंदी पाठ्य पुस्तक नवतरंग-4 के पृष्ठ -97-98 पर लिखी कविता का अगला भाग पढ़ेंगे।

सब बच्चे इस कविता का अर्थ समझेंगे और स्वयं उच्च स्वर में बोलेंगे व याद करेंगे। आइए! पिछली बार के कार्य में हमने जो पढ़ा है, उसका थोड़ा-सा भाग फिर से पढ़ लेते हैं।

एक बार एक चित्रकार सुनसान स्थान में चित्रकारी करने के लिए गया और अपनी धुन में मस्त होकर चित्रकारी करने लगा। अचानक वहाँ जंगल का राजा शेर आ जाता है। उसे देखकर चित्रकार डर गया। उसने शेर से उसका चित्र बनाने को कहा। डकरू- मकरू नामक शेर वहाँ चित्रकार से अपना चित्र बनवाने को बैठ गया। शेर को चुपचाप बैठा देखकर चित्रकार में कुछ हिम्मत आ गई।

चित्रकार ने कहा - हो गया आगे का तैयार,
अब मुँह आप उधर तो करिए, जंगल के सरदार।
बैठ गया वह पीठ फिराकर, चित्रकार की ओर,
चित्रकार चुपके से खिसका, जैसे कोई चोर।

शेर चित्रकार की ओर ध्यान से देख रहा था। चित्रकार ने शेर से कहा - आगे का चित्र तो आपका बनकर तैयार हो गया है। जंगल के सरदार, अब आप अपना मुँह उस ओर तो करिए। अब मैं आपके पीछे के भाग की चित्रकारी करूँगा।

16.12.24

DATE
PAGE No 2

कक्षा - चौथी शिक्षिकाएँ - सुमन शर्मा, रोमा रानी
विषय - हिंदी साहित्य (पाठ-13 चतुर चित्रकार).

चित्रकार के कहने पर शेर पीठ फेरकर बैठ गया। जैसे ही चित्रकार ने उसे पीठ फिराकर बैठे देखा तो वह चोरों की तरह वहाँ से खिसक गया। शेर को चित्रकार का चोरों की तरह जाने का पता नहीं चला। अब बच्चो! मैं आगे कविता पढ़कर सुनाती हूँ, उसके बाद कविता का अर्थ बताऊँगी।

बहुत देर तक आँख मूँदकर, पीठ घुमाकर शेर,
बैठे-बैठे लगा सोचने, इतनी हुई क्यों देर?
झील किनारे नाव थी, एक रखा था बाँस,
चित्रकार ने नाव पकड़कर, ली जी भर के साँस।

बच्चो! चित्रकार तो अपनी जान बचाकर वहाँ से भाग गया लेकिन शेर वहाँ बहुत देर तक आँख मूँदकर (बंद करके) बैठा रहा। फिर उसने सोचा - चित्र बनाने में इतनी देर चित्रकार को क्यों लग रही है! वहीं दूसरी ओर चित्रकार भागकर झील के किनारे पहुँच गया। वहाँ एक नाव थी और एक बड़ा-सा बाँस रखा था। चित्रकार ने झटपट नाव में चढ़कर जी भर के साँस ली क्योंकि शेर को देखकर वह डर गया था। नाव में बैठकर उसकी जान में जान आई।

बच्चो! इस कविता को हम यहीं तक पढ़ेंगे। इसका शेष भाग अगले सप्ताह पढ़ेंगे। अब मैं आपको गृहकार्य दे रही हूँ।

गृहकार्य :- सब बच्चे इस पढ़ाई गई कविता को दो-तीन बार पढ़ेंगे। पृष्ठ-18 पर लिखे शब्दार्थ को अपनी अभ्यास-पुस्तिका में लिखेंगे।

धन्यवाद।

(अंतिम पृष्ठ-2)

Scanned with CamScanner